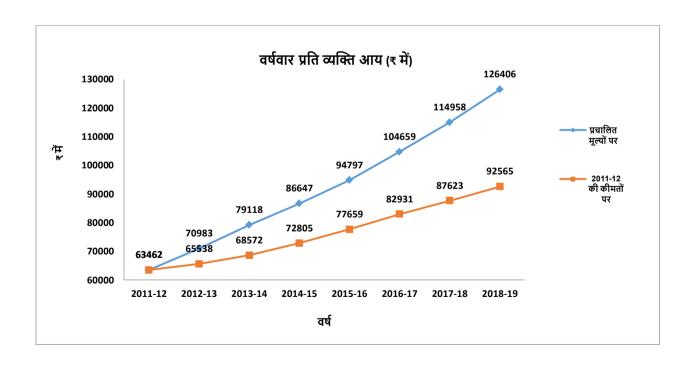
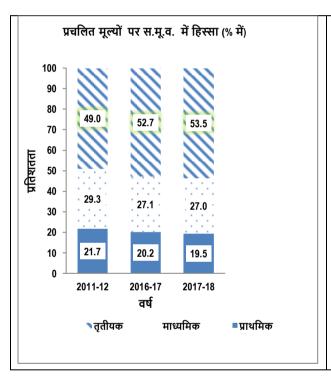
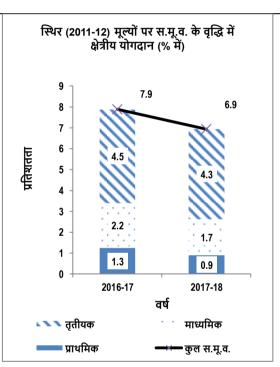
राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी 2019 प्रमुखताएँ

- 1. वर्ष 2018-19 के लिए स्थिर (2011-12) मूल्यों पर सकल देशीय उत्पाद ₹ 140.78 लाख करोड़ का अनुमान है जबिक वर्ष 2017-18 के लिए ₹131.80 लाख करोड़ का अनुमान रहा था जो वर्ष 2018-19 के दौरान 6.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। प्रचलित मूल्यों पर, वर्ष 2018-19 के लिए सकल देशीय उत्पाद ₹190.10 लाख करोड़ का अनुमान है, जबिक वर्ष 2017-18 के लिए यह ₹170.95 लाख करोड़ का अनुमान था, जो वर्ष के दौरान 11.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।
- 2. वर्ष 2018-19 के लिए स्थिर (2011-12) मूल्यों पर राष्ट्रीय आय (अर्थात निवल राष्ट्रीय आय) ₹123.30 लाख करोड़ है जबिक वर्ष 2017-18 के लिए यह ₹115.31 लाख करोड़ था जो वर्ष 2018-19 के दौरान 6.9 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। प्रचलित मूल्यों पर वर्ष 2018-19 के लिए राष्ट्रीय आय ₹168.37 लाख करोड़ रहने का अनुमान है जो वर्ष 2017-18 के लिए ₹151.28 लाख करोड़ के अनुमान के मुकाबले 11.3 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।
- 3. वर्ष 2018-19 के लिए प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अर्थात स्थिर (2011-12) मूल्यों पर प्रति व्यक्ति निवल राष्ट्रीय आय, ₹92,565 अनुमानित है जबिक वर्ष 2017-18 के लिए यह ₹87,623 थी। यह वर्ष 2018-19 के दौरान प्रति व्यक्ति वास्तविक आय में 5.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। वर्ष 2018-19 के दौरान प्रचलित मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय ₹1,26,406 अनुमानित है जबिक वर्ष 2017-18 में यह, ₹114,958 थी जो 10.0 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।



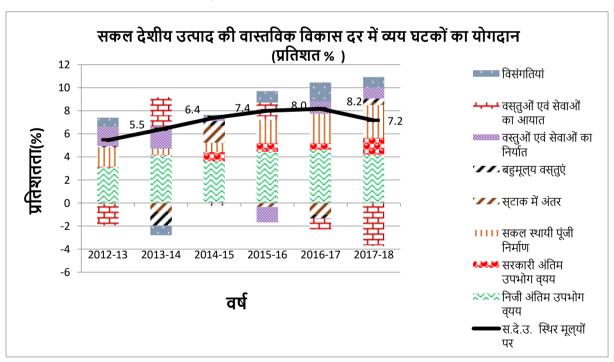
- 4. वर्ष 2017-18 में, सार्वजिनक क्षेत्र जिसमें सामान्य सरकार (सरकार के प्रशासिनक विभाग तथा स्वायत्त संस्थान) और सार्वजिनक निगम (विभागीय उद्यम एवं गैर-विभागीय उद्यम) शामिल हैं, ने कुल स.मू.व में 18.9 प्रतिशत का योगदान दिया। इस अविध के दौरान, घरेलू क्षेत्र का सबसे अधिक योगदान रहा जिसके बाद निजी गैर-वित्तीय निगम, जिनका कुल स.मू.व. में क्रमश: 43.1 प्रतिशत तथा 35.0 प्रतिशत का योगदान रहा है।
- 5. प्रचलित मूल्यों पर, स.मू.व. में प्राथमिक और माध्यमिक क्षेत्रों के हिस्से वर्ष 2011-12 में क्रमश: 21.7 और 29.3 प्रतिशत से घटकर वर्ष 2017-18 में क्रमश: 19.5 प्रतिशत और 27.0 प्रतिशत हो गये हैं। तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा वर्ष 2011-12 में 49.0 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2017-18 में 53.5 प्रतिशत हो गया है।
- 6. निम्नलिखित चार्टों में प्रचलित मूल्यों पर स.मू.व. की संरचना और वास्तविक स.मू.व. की विकास दर को अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के योगदान के रूप में दर्शाया गया है:





7. वर्ष 2017-18 व 2016-17 के दौरान वास्तविक स.मू.व में वृद्धि क्रमश: 6.9 प्रतिशत व 7.9 प्रतिशत की रही है। वर्ष 2017-18 के दौरान वास्तविक स.मू.व में वर्ष 2016-17 की अपेक्षा कम वृद्धि मुख्यत: "कृषि ,वानिकी और मत्स्य" (5.0%), "खनन और उत्खनन" (5.1%) "विनिर्माण" (5.9%), "बिजली ,गैस ,जलापूर्ति और अन्य आवश्यक सेवाएं" (8.6%), "निर्माण" (5.6%) "व्यापार, मरम्मत, होटल और रेस्तरां" (10.0%) और "स्थावर सम्पदा, आवास-स्वामित्व तथा व्यावसायिक सेवाओं" (7.0%) सापेक्ष रूप से कम वृद्धि के कारण हुई है ।

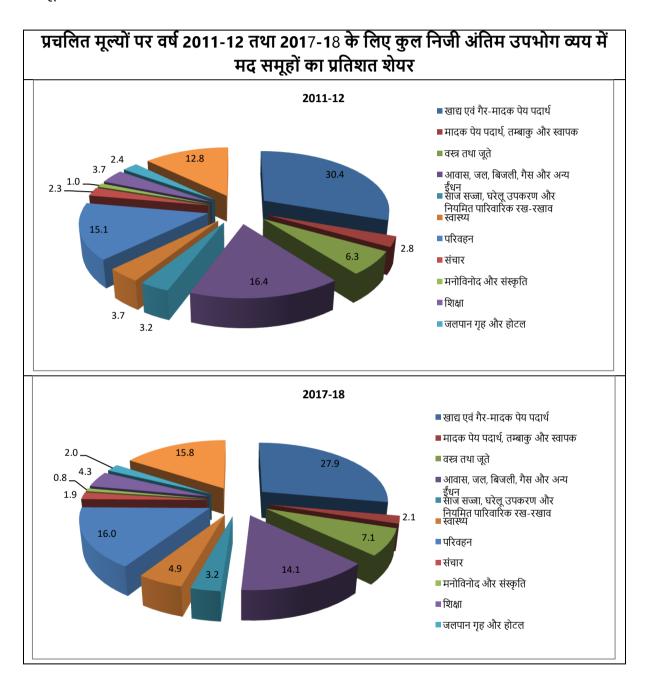
- 8. फसल और पशुधन क्षेत्रों का निष्पादन: वर्ष 2016-17 के मुकाबले वर्ष 2017-18 में स्थिर मूल्यों पर फसल उत्पादन में 3.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई जबिक इसी अविध में पशुधन उत्पादन में 5.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है । यह वृद्धि दर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय (कृ.िक.क.म.) द्वारा जारी उत्पादन अनुमानों के समान है । कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी किये गये उत्पादन के चौथे अग्रिम अनुमान के अनुसार, वर्ष 2017-18 में खाद्यान्नों के कुल उत्पादन में 3.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है । यही नहीं, वर्ष 2017-18 में, चावल के उत्पादन में 2.9 प्रतिशत की वृद्धि और गेहूं में 1.2 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई । यह वृद्धि दर कुछ हद तक वर्ष 2016-17 में 2015-16 से पाये गये खाद्यान्नों के वृद्धि दर से कम हैं । वर्ष 2016-17 में, कुल खाद्यान्नों के उत्पादन में 9.4 प्रतिशत की वृद्धि, चावल उत्पादन में 5.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई ।
- 9. वर्ष 2017-18 के दौरान, थोक मूल्य सूचकांक बास्केट में विभिन्न मद समूहों में मूल्यों की प्रतिशत वृद्धि 8.8 प्रतिशत से लेकर 12.6 प्रतिशत तक रही है। इन मूल्य सूचकांकों के संचलन के अनुरूप, सकल देशीय उत्पाद के प्रचलित मूल्य अनुमानों में निहित मूल्य सूचकांक में वर्ष 2017-18 में 3.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।
- **10.** सकल देशीय उत्पाद पर व्यय के मुख्य घटक अंतिम उपभोग व्यय और पूंजी निर्माण हैं जो बाजार मूल्य पर मापे जाते हैं। सकल देशीय उत्पाद की वास्तविक विकास दर में व्यय घटकों का योगदान निम्न चार्ट में दिखाया गया है:



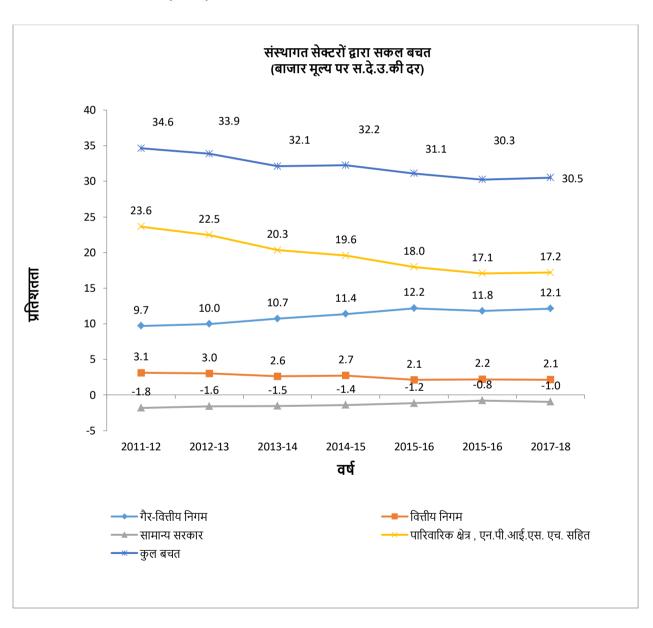
11. प्रचलित मूल्यों पर घरेलू बाजार में निजी अंतिम उपभोग व्यय वर्ष 2016-17 में ₹91.65 लाख करोड़ के मुकाबले वर्ष 2017-18 में ₹101.44 लाख करोड़ रहने का अनुमान है। स्थिर (2011-12) मूल्यों पर, घरेलू बाजार में निजी अंतिम उपभोग व्यय वर्ष 2016-17 में ₹69.48 लाख करोड़ के मुकाबले वर्ष 2017-18 में ₹74.71 लाख करोड़ रहने का अनुमान है। वर्ष 2017-18 में घरेलू बाजार में

प्रति व्यक्ति निजी अंतिम उपभोग व्यय प्रचलित मूल्यों पर ₹77,085 और स्थिर (2011-12) मूल्यों पर ₹56,769 रहने का अनुमान है जबिक वर्ष 2016-17 में क्रमश: ₹70,557 और ₹53,491 था।

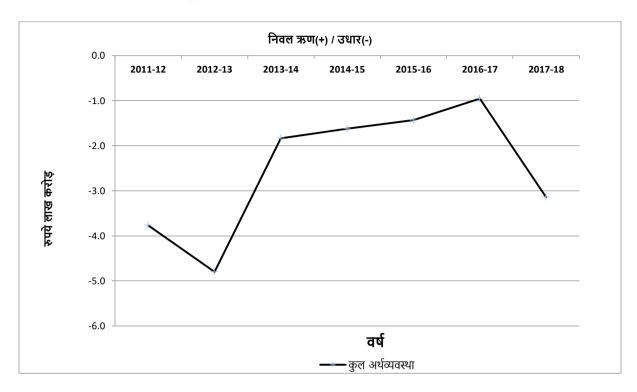
12. वर्ष 2011-12 और वर्ष 2017-18 के लिए कुल निजी अंतिम उपभोग व्यय में विभिन्न सामग्री-समूहों के प्रतिशत हिस्से निम्न चार्टों में दर्शाये गये हैं:



- 13. वर्ष 2017-18 के दौरान प्रचलित मूल्यों पर सकल बचत वर्ष 2016-17 में ₹ 46.48 लाख करोड़ के मुकाबले ₹52.16 लाख करोड़ का अनुमान है, जो कि सकल देशीय उत्पाद का 30.5 प्रतिशत है जबिक पिछले वर्ष यह 30.3 प्रतिशत था। सकल बचत की दर में वृद्धि का मुख्य कारण कुल सकल देशीय उत्पाद का प्रचलित मूल्यों पर पारिवारिक क्षेत्र के सकल बचत में वर्ष 2016-17 में 17.1 प्रतिशत से वर्ष 2017-18 में 17.2 प्रतिशत तक वृद्धि होना रहा।
- **14.** वर्ष 2017-18 में निवल बचत वर्ष 2016-17 में ₹30.8 लाख करोड़ के मुकाबले ₹34.34 लाख करोड़ दर्ज की गई। यह वर्ष 2016-17 में 22.2 प्रतिशत के मुकाबले वर्ष 2017-18 में निवल देशीय उत्पाद का 22.4 प्रतिशत हिस्सा है।

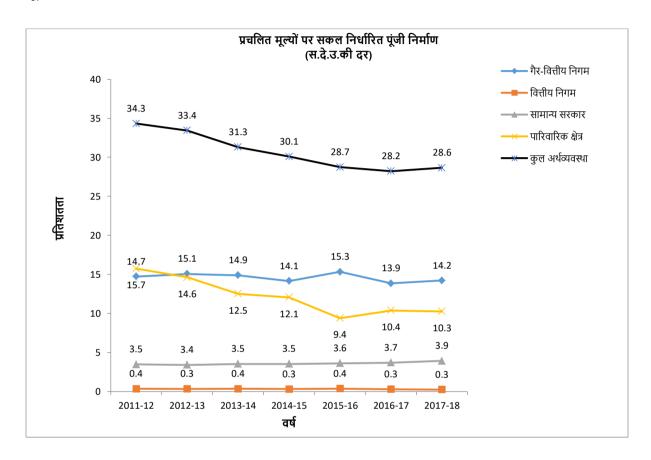


15. निम्नलिखित ग्राफ़ में पूरी अर्थव्यवस्था का निवल ऋण(+) लिया गया है।



- **16.** कुल अर्थव्यवस्था की निवल उधारी वर्ष 201**6**-1**7** में ₹0.95 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2017-18 के दौरान ₹3.14 लाख करोड़ हो गयी। पारिवारिक क्षेत्र और वित्तीय निगम ऐसे ऋण दाता हैं जो सरकार और गैर-वित्तीय निगमों के संसाधनों के अंतर को वित्तपोषित करते हैं।
- 17. प्रचलित मूल्यों पर सकल पूंजी निर्माण वर्ष 2016-17 में ₹47.41 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2017-18 में ₹55.27 लाख करोड़ और स्थिर (2011-12) मूल्यों पर वर्ष 2016-17 में ₹41.46 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2017-18 में ₹46.80 लाख करोड़ हो गया है। प्रचलित मूल्यों पर सकल पूंजी निर्माण की दर वर्ष 2017-18 में 32.3 प्रतिशत है जबिक वर्ष 2016-17 में यह 30.9 प्रतिशत थी। स्थिर (2011-12) मूल्यों पर सकल पूंजी निर्माण की दर वर्ष 2016-17 में 33.7 प्रतिशत से बढ़कर वर्ष 2017-18 में 35.5 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2017-18 में स्थिर मूल्यों पर निवल पूंजी निर्माण की दर वर्ष 2016-17 में 22.5 प्रतिशत के मुकाबले 24.1 प्रतिशत रही।
- 18. प्रचलित मूल्यों पर सकल पूंजी निर्माण के अंतर्गत, सकल स्थायी पूंजी निर्माण (स.नि.पू.स्था.) वर्ष 2016-17 में ₹43.35 लाख करोड़ के मुकाबले वर्ष 2017-18 में ₹48.97 लाख करोड़ है। प्रचलित मूल्यों पर, गैर-वित्तीय निगमों का सकल स्थिर पूंजी निर्माण वर्ष 2016-17 में ₹21.28 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2017-18 में ₹24.29 लाख करोड़ हुआ है, वित्तीय निगमों का वर्ष 2016-17 में ₹0.46 लाख करोड़ से घटकर वर्ष 2017-18 में ₹0.43 लाख करोड़ हो गया और सामान्य सरकार का वर्ष 2016-17 में ₹5.67 लाख करोड़ बढ़कर वर्ष 2017-18 में ₹6.71 लाख करोड़ हुआ है जबिक पारिवारिक क्षेत्र का स.नि.पू.स्था. वर्ष 2016-17 में ₹15.94 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2017-18 में ₹17.54 लाख करोड़ हुआ है।

- **19.** प्रचलित मूल्यों पर इन्वेंट्रीज के परिवर्तन (सी.आई.एस.) वर्ष 2016-17 में ₹1.40 लाख करोड़ से बढ़कर वर्ष 2017-18 में ₹1.74 लाख करोड़ हुआ है।
- **20.** प्रचलित मूल्यों पर वर्ष 2011-12 से वर्ष 201**7**-1**8** तक सकल देशीय उत्पाद में सकल स्थायी पूंजी निर्माण की दर को निम्न चार्ट में दर्शाया गया है:



- **21.** वर्ष 2017-18 के दौरान उपयोगी उद्योगों में कुल सकल पूंजी निर्माण (स.पू.नि.) में सही अर्थों में लगभग 9.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है ।
- **22.** यह देखा गया है कि वर्ष 2011-12 से वर्ष 2017-18 की अवधि के दौरान सरकार के मौजूदा व्यय में 102.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि पूंजीगत व्यय में, 103.5 प्रतिशत वृद्धि रही है।
